

1. हृदय R. GORR. 2, 39, 29. — 2) *auseinanderstieben* (von Kämpfern in der Schlacht) *दीर्यति sich fürchten* VOP. in Dhātup. 26, 139. *दरति, दणाति* dass. VOP. in Dhātup. 31, 23; vgl. 19, 47, 34, 15): *पर्वता अपि दीर्येयुः किं पुनर्युधि राज्ञसाः* R. 5, 58, 11. *यतो यतः प्रेतते स्म गदामुद्यम्य पाण्डवः । तेन तेन स्म दीर्यन्ते सर्वसैन्यानि* MBh. 6, 2801. 146. 8, 3977. *एते दीर्यन्ति सगणाः पाञ्चालानां मकारथाः* 4357. *सेना दीर्णा* 6, 144. 146. HARIV. 10621. *Daher दीर्ण = भीत erschrocken* MED. p. 16. *der den Kopf verloren hat, in Verzweiflung seiend, von Angst ergriffen: एको दीर्णो दारयति सेनां सुमकृतीमपि* MBh. 6, 144. 5, 4622. fg. 4627. — Vgl. दर, दरित, दल्. — *caus. दरयति* Dhātup. 19, 47. 1) *sprengen, zerreißen, zerspalten, aufbrechen*: *पुरा यदग्ने दरयन्दीदेः* RV. 7, 5, 3. *व्रजं दरयद्दृषभेण पिप्रीः* 10, 99, 11. *वलं रवेण दरयः* 1, 62, 4. *इन्द्रेण दस्युं दरयतः* 53, 4. *खुरैः नुरप्रैरदरयन्तदापः* Bṛāg. P. 3, 13, 30. In der späteren Sprache *दारयति, तेः*; aor. *अदरत्* P. 7, 4, 95. VOP. 18, 2. *दीदरस्* MBh. 5, 4627. HARIV. 15339. *दारयन्निव पर्वतान्* MBh. 4, 1456. *दारयन्भूमिम्* 3, 16422. 7, 8223. 13, 859. R. 1, 16, 24. 4, 43, 13. 6, 18, 4. VARĀH. BRH. S. 43 (34), 27. *खुरैर्दारयते मक्रीम्* HARIV. 4282. *दारयाण* MBh. 8, 907. *दारयाण* 14, 1725. *दारित* 3, 8899. *अथ वज्रं (nom.) दण्डकाष्ठमनुप्रविश्य तद्विलमदारयत्* so v. a. *durch Spalten, Graben eröffnen* 1, 795. *विचिवैः शस्त्रैर्दारयत् पुरीमिमाम्* HARIV. 5025. 5022. 5009. R. 5, 80, 18. (तम्) *सायकैस्तीक्ष्णैर्दारयासास* MBh. 6, 1712. R. 3, 42, 41. 56, 50. 5, 40, 12. Gīt. 1, 16. *मुष्टिनाददरत्स्य मूर्धानम्* BHĀṬ. 15, 81. *कृपादारितभवत्प्रत्यङ्ग* PRAB. 85, 12. *Suṣr. 1, 182, 7. दारितखुराः (गावः) VARĀH. BRH. S. 60, 3. AK. 3, 2, 50. H. 1488. — 2) zersprengen, auseinander laufen machen: निर्दहन्तं रणे योधान्दारयन्तं च सर्वशः* MBh. 7, 366. *साक्षा दानेन मानेन प्रकृतीरनुरञ्जयेत् । आत्मीया भेददण्डाभ्यां परकीयाश्च दारयेत् ॥* KĀM. NĪRIS. 8, 70. *एको दीर्णो (der den Kopf verloren hat) दारयति सेनां सुमकृतीमपि* MBh. 6, 144. *मा दीदरस्त्वं सुकृदो मा त्वां दीर्णं प्रकासिषुः* so v. a. *sich entfremden* 5, 4627. — *intens. ved. दर्दरीमि, दर्दरिषि, दर्दरीतिः दर्दकि, दर्दतुः; अदर्दर, दर्दर, दर्द* 2. sg. für *दर्दर, अदर्दतम्, अदर्दरुस्*; *Bed. wie beim caus.:* त्वं सूकारस्य दर्दकि त्वं दर्दतुं सूकारः RV. 7, 55, 4. *अदर्दरुत्सम्* 5, 23, 1. *पुः* 1, 63, 7. 6, 20, 7. *अर्दरुम्* 4, 16, 8. *आदर्दरो भुवना दर्दरीमि* 8, 89, 4. *दनेो विशो इन्द्र मृधवाचः सप्त यत्पुरः शर्म शारदार्दरुत्* 1, 174, 2. 6, 20, 10. Hierher zieht Śā. auch die ein Mal sich findende Form *दादकि* in der Stelle: *अवर्मक इन्द्र दादकि* RV. 1, 133, 6.

— *अनु pass. 1) hinterher durchbrechen —, sich einen Weg öffnen: आपस्तस्तम्बिरे (sic) चास्य (नृपस्य) समुद्रमभियास्यतः । सरितश्चान्वदीर्यत्त घञभङ्गश्च नाभवत् ॥* MBh. 12, 1035. — 2) *nach Jmd (acc.) auseinanderstieben oder den Kopf verlieren: एको दीर्णो दारयति सेनां सुमकृतीमपि । तां दीर्णामनुदीर्यन्ति योधाः प्रूरतरा अपि* MBh. 6, 144. 5, 4623.

— *अप intens. aufreißen: अर्प दृच्छानि दर्दत् (partic.)* RV. 6, 17, 5.

— *अव spalten, aufreißen, zersprengen: दिवस्करवन्धमवर्षडुद्रिणम्* RV. 9, 74, 7. *पदै मायं नावदृणीयात्* ÇĀT. Br. 5, 2, 1, 18. 19. 4, 3, 20. *पूयः स्वमाश्रयमवदीर्य — कृच्छसाद्यो भवति* Suṣr. 1, 63, 1. — *pass. bersten, sich spalten: यत्र वा अस्या अघदीर्यते* ÇĀT. Br. 7, 2, 4, 8. KAUC. 93. 120. *अघदारणकाले तु पृथिवी नावदीर्यते* R. 2, 77, 16. *अघदीर्णा च पृथिवीम्* 69, 12. (हृदयं मम यत्) *नावदीर्यते* MBh. 3, 17300. HARIV. 3675. *हृदयेनावदीर्णो* 4819. *aufspringen, sich öffnen, sich von etnander thun: गुदं चावदीर्यते* Suṣr. 1, 265, 16. *अघदीर्णा* 82, 17. *ततो (किं) ऽन्वदवदीर्यते*

III. Theil.

MBh. 5, 1252. *अथावदीर्णा ददमुर्विलम्* R. 4, 50, 11. *अघदीर्णा = हुत auseinandergelaufen, geschmolzen* AK. 3, 2, 39. *भयावदीर्णा der aus Angst den Kopf verloren hat: भयावदीर्णाः संत्रासादबद्धं बहु भाषसे* MBh. 8, 1831. — *caus. bersten machen, zerspalten: वसुधां चावदारयेत्* R. 6, 4, 22. MBh. 3, 8870. RAGH. 13, 3. *मनःशिलागिरेः प्रङ्गं वज्रेणोवावदारितम्* MBh. 8, 2804. R. 4, 9, 47. *तुरगैश्चावदारितेः* HARIV. 5602. — Vgl. अघदरणा, अघदरणा.

— *व्यव pass. bersten, zerspringen: व्यवदीर्णो मनो मम* R. 2, 72, 28.

— *आ 1) sich spalten, Risse bekommen: आदीर्यं* ÇĀT. Br. 14, 1, 2, 12. — 2) *spalten, aufbrechen, öffnen; erschliessen, zugänglich machen, zum Vorschein bringen: तस्या हृदयमादीर्यं* R. 5, 56, 60. *आ न इन्द्र मक्रीमिषुं पुरं न दर्षि गोमतीम्* RV. 8, 6, 23. *तेन दृच्छा चिदद्रिव आ वासं दर्षि सातपे* 5, 39, 3. 8, 33, 3. 9, 68, 7. *चित्रमा दर्षि राधः* 1, 110, 9. 120, 10. *आ त्रिकमुत प्रियमिन्द्र दर्षि जनानाम्* 8, 24, 4. *य आदत्या शशमानाय सुन्वते दातो ङरित्र उक्थ्यम्* *aufthuend d. h. mit offener Hand* 55, 2. *य आदत्या परिपन्थीव प्रोरा ऽयस्वना विभज्जति वेदः* 1, 103, 6. *आर्दता वज्रं स्वविरं न भीम उदेव कोशं वसुना नृष्टम्* 4, 20, 6. *med.: आ दर्षते शवसा सप्त दानूनं* 10, 120, 6 (v. l. des AV. दर्शति, irrig für दर्षति). — *intens. dass.: आ नो गोत्रा दर्दकि गोपते गाः* RV. 3, 30, 21. *आर्दतमपरिहितान्यश्ना रिचिच्युः क्षाश्चित्ततूदाना* 4, 28, 5. *आ नो गव्यान्पृथ्यां सकृन्ना प्रूर दर्दकि* 8, 34, 14. *यः सुन्वते पचते डुध आ चिद्वाजं दर्दरिषि* 2, 12, 15. — Vgl. आर्दरि, आर्दरि.

— *उद् in उदीर्णविराग्य* DAÇAK. 68, 11 (BENF. Chr. 185, 2) wohl falsche Lesart für उदीर्ण; s. u. ईर.

— *नि caus. निदार्प* PANĀT. 121, 2 falsche Lesart für विदार्प (s. BENFHY).

— *निस् zerreißen: (यः) नानादर्यं तं नखैर्निर्ददार* Bṛāg. P. 7, 8, 45. — *caus. zerreißen, zerspalten, aufwühlen: चक्रविदारितोरस्क* HARIV. 5691. *खुरैर्विदारयन्मक्रीम्* 3716. *तडक्ता मेदिनी कृत्स्ना कारुभिर्निर्दारयत्* *aufwühlen lassen* RĀGĀ-TAR. 4, 272.

— *परि med. ringsum durchbrechen: अस्माकं शत्रून्परि प्रूर विञ्चतेो दर्मा दर्षेष्टि विञ्चतः* RV. 1, 132, 6. — *pass. ringsum sich ablösen d. h. wassersüchtig werden (weil die aufschwellende Haut sich vom Körper abzulösen scheint): प्रजापतिर्वरुणायाश्चमनयत्स स्वां देवतांमार्कत्स पर्यदीर्यत* TS. 2, 3, 42, 1. *परिदीर्णा* ÇĀT. Br. 2, 5, 2, 24. 2, 3. — Vgl. परिदर.

— *प्र zerbrechen, zerreißen: प्र यच्छता सकृन्ना प्रूर दर्षि* RV. 6, 26, 5.

— *pass. sich spalten, sich aufthun: (पृथिव्याः) शोचत्या ऽमे प्रदराः प्रादीर्यत्* At. Br. 6, 35. *स्वयंप्रदीर्णा* KĀT. Çr. 15, 1, 10. *auseinanderfahren, gesprengt werden: ततः प्रादीर्यत चमूर्धनजयशरकृता । मकावातसमाविद्धा मकानैरिव सागरे ॥* MBh. 8, 4106. — *caus. auseinander sprengen, zerreißen: ततः प्रकीर्णा सुमकृद्वलं तव प्रदारितं सेतुमिवाभसो यथा* MBh. 8, 4084. *प्रदारयन्तं सैन्यानि बलौघेन* 6, 2802. — Vgl. प्रदर.

— *अभिप्र pass. auseinanderstieben: यद्यैवः पर्वतश्रेष्ठमासाद्याभिप्रदीर्यते* MBh. 8, 3976.

— *वि zerreißen, zerfleischen: मायामयं जालं माययैव विदीर्य सः* MBh. 3, 673. *विददार नखैस्तस्य पृष्ठं स पतगेश्वरः* R. 3, 57, 24. 5, 68, 2. 4. MBh. 1, 1477. 9, 1070. RAGH. 12, 22. Bṛāg. P. 2, 7, 14. *zerspalten* so v. a. *eröffnen: वि व्रजं पुरं न दर्षसि* RV. 8, 32, 5. — *pass. auseinanderbersten, zerspringen: यस्य धर्मो विदीर्यते* ÇĀT. Br. 14, 3, 1. *विदीर्यन्ते च पर्वताः*